राज्य सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 478

05 फरवरी, 2020 को उत्तर के लिए

इस्पात उद्योग की निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ाया जाना

478. श्री मो. नदीमुल हकः

क्या इस्पात मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या हाल के दिनों में लौह-अयस्क के दामों में बढ़ोतरी हुई है और यदि हां, तो देश में इस्पात उद्योग पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है;

(ख) विगत पांच वर्षों से इस्पात के निर्यात और आयात का ब्यौरा क्या है; और

(ग) सरकार वैश्विक इस्पात बाजार में पड़ोसी देशों के आने के संदर्भ में निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ाने की किस तरह से योजना बना रही है?

उत्तर

इस्पात मंत्री **(श्री धर्मेंद्र प्रधान)**

(क): जी हाँ। घरेलू लौह अयस्क की दरों में हाल ही में 15-20% की वृद्धि हुई है। चूंकि, लौह अयस्क इस्पात हेतु आधारभूत कच्ची सामग्री है, इसलिए घरेलू लौह अयस्क की कीमतों में वृद्धि से इस्पात उत्पादन की लागत बढ़ जाती है।

(ख): पिछले पाँच वर्षों तथा चालू वर्ष के दौरान इस्पात के निर्यात तथा आयात का विवरण निम्नानुसार है:-

वर्ष	**निर्यात (मात्रा मिलियन टन में)**	**आयात (मात्रा मिलियन टन में)**
2014-15	5.59	9.32
2015-16	4.08	11.71
2016-17	8.24	7.23
2017-18	9.62	7.48
2018-19	6.36	7.84
2019-20 (अप्रैल, 2019 - दिसंबर, 2019) (अनंतिम)	6.52	5.51

(स्रोत: जेपीसी)

(ग): भारतीय इस्पात क्षेत्र एक नियंत्रणमुक्त क्षेत्र है। भारतीय इस्पात कंपनियाँ विदेशी व्यापार के साथ-साथ घरेलू व्यापार के लिए बाजार के समीकरणों के आधार पर अपने वाणिज्यिक निर्णय लेती हैं। तथापि, सरकार ने निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ावा देने के लिए निम्नानुसार विभिन्न उपाय किए हैं:

(i) एमईआईएस, बाजार पहुँच पहल, निर्यात संवर्धन परिषद, अग्रिम प्राधिकार आदि जैसी निर्यात संवर्धन योजनाएं।

(ii) कोकिंग कोयला, लौह अयस्क, इस्पात स्क्रैप, निकेल आदि जैसी महत्वपूर्ण इनपुट पर बहुत कम आयात शुल्क को बनाए रखना।

(iii) लॉजिस्टिक लागत, जोकि इस्पात उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है, को कम करने के लिए मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक को बढ़ावा देना तथा अंतर्देशीय जलमार्गों के प्रयोग को बढ़ाना।

****